



NEERAJ®

D.E.C.E.-3

बच्चों के लिए सेवाएं एवं कार्यक्रम (Services and Programmes for Children)

**Chapter Wise Reference Book
Including Many Solved Sample Papers**

Based on

IGNOU.
& Various Central, State & Other Open Universities

By: Narad Rai



**NEERAJ
PUBLICATIONS**

(Publishers of Educational Books)

Mob.: 8510009872, 8510009878 E-mail: info@neerajbooks.com

Website: www.neerajbooks.com

MRP ₹ 300/-

Content

बच्चों के लिए सेवाएं एवं कार्यक्रम (Services and Programmes for Children)

Question Paper—June-2024 (Solved)	1
Question Paper—December-2023 (Solved)	1-2
Question Paper—June-2023 (Solved)	1-2
Question Paper—December-2022 (Solved)	1-2
Question Paper—Exam Held in March-2022 (Solved)	1-2
Question Paper—Exam Held in February-2021 (Solved)	1-2
Question Paper—June, 2019 (Solved)	1-3
Question Paper—June, 2018 (Solved)	1
Question Paper—June, 2017 (Solved)	1

<i>S.No.</i>	<i>Chapterwise Reference Book</i>	<i>Page</i>
प्रारम्भिक बाल्यावस्था देखभाल एवं शिक्षा में सैद्धांतिक एवं व्यावहारिक पक्ष (Theory and Practice in Early Childhood Care and Education)		
1.	प्रारम्भिक बाल्यावस्था देखभाल एवं शिक्षा: एक परिप्रेक्ष्य	1
	(Early Childhood Care and Education in Perspective)	
2.	प्रारम्भिक बाल्यावस्था शिक्षा में कुछ सैद्धांतिक अभिविन्यास	7
	(Some Theoretical Orientations in Early Childhood Education)	
3.	बच्चों के लिए कार्यरत संगठन और संस्थाएँ (Organizations for Children)	17
विशेष आवश्यकताओं वाले बच्चे भाग-1 (Children with Special Needs Part-1)		
4.	विशिष्ट बच्चों को समझना (Understanding Special Children)	27
5.	विशिष्ट बच्चों के लिए सेवाएं (Services for Special Children)	36
6.	बच्चों की देखभाल में माता-पिता की सहायता (Helping Parents to Cope)	48

S.No.	Chapterwise Reference Book	Page
-------	----------------------------	------

विशेष आवश्यकताओं वाले बच्चे भाग-2 (Children with Special Needs Part-2)

7.	मंदबुद्धि बच्चे (Children with Mental Retardation)	57
8.	शारीरिक रूप से अपंग बच्चे (Children with Physical Disability)	65
9.	व्यवहार संबंधी समस्याओं वाले बच्चे (Children with Behaviour Difficulties)	74
10.	दृष्टि दोष वाले बच्चे (Children with visual Impairment)	82
11.	श्रवण दोष वाले बच्चे (Children with Hearing Impairment)	90

**अभिभावकों तथा समुदाय के साथ संचार
(Communicating with Parents and Community)**

12.	संचार की संकल्पना (Concept of Communication)	97
13.	संचार के कुछ तरीके (Some Methods of Communication)	103
14.	संचार की कुछ कार्यनीतियां (Some Strategies in Communication)	112
15.	संचार में सहायक कुछ सामग्रियां (Some Communication Aids)	122
16.	प्रारम्भिक बाल्यावस्था देखभाल एवं शिक्षा के कुछ विषय एवं सन्देश (Some Themes and Messages in FCCE)	129

**बच्चों के लिये कार्यक्रमों का प्रबंधन कुछ परिप्रेक्ष्य
(Managing Children's Programmes Some Perspectives)**

17.	प्रबंधन के मूलभूत सिद्धांत (Basics of Management)	139
18.	फंड प्राप्त करना और बजट बनाना	146
	(Obtaining Funds and Formulating a Budget)	
19.	समेकित बाल-विकास सेवा कार्यक्रम (आई.सी.डी.एस. कार्यक्रम)—एक केस अध्ययन	151
	(A Case Study—ICDS Programme)	
20.	एक केस अध्ययन—कामकाजी महिलाओं के बच्चों के लिए मोबाइल क्रीश	158
	(A Case Study—Mobile Creches for Working Mother's Children)	



**Sample Preview
of the
Solved
Sample Question
Papers**

Published by:



**NEERAJ
PUBLICATIONS**

www.neerajbooks.com

QUESTION PAPER

June – 2024

(Solved)

बच्चों के लिए सेवाएं एवं कार्यक्रम
(Services and Programmes for Children)

D.E.C.E.-3

समय : 3 घण्टे]

] अधिकतम अंक : 100

नोट : किन्हीं पाँच प्रश्नों के उत्तर दीजिए। सभी प्रश्नों के अंक समान हैं।

प्रश्न 1. (क) बच्चों को प्रारंभिक बाल्यावस्था देखभाल और शिक्षा सेवाएँ प्रदान करने के किन्हीं तीन कारणों का वर्णन कीजिए।

उत्तर-संदर्भ-देखें-अध्याय-1, पृष्ठ-6, प्रश्न 3

(ख) देश में छोटे बच्चों के लिए कार्य करने वाले किसी एक राष्ट्रीय स्तर के संगठन द्वारा प्रदान की जाने वाली सेवाओं का वर्णन कीजिए।

उत्तर-संदर्भ-देखें-अध्याय-3, पृष्ठ-21, प्रश्न 1

प्रश्न 2. फ्रोबेल और टैगोर के शैक्षिक दर्शन के मूल विचार बताइए। वर्तमान संदर्भ में शालापूर्व शिक्षा में उनके विचारों की प्रासंगिकता की चर्चा कीजिए।

उत्तर-संदर्भ-देखें-अध्याय-2, पृष्ठ-12, ' (घ) फ्रोबेल के शैक्षणिक दर्शन के मूल भूत विचार', पृष्ठ-15, 'टैगोर के शैक्षिक दर्शन के मूल विचार'

प्रश्न 3. (क) सामान्य कार्यशीलता में निर्णायक क्षेत्र के प्रभावित होने के संदर्भ में 'विशिष्ट बच्चों' से आप क्या समझते हैं? इसका विस्तार में वर्णन कीजिए।

उत्तर-संदर्भ-देखें-अध्याय-4, पृष्ठ-30, प्रश्न 1, पृष्ठ-32, प्रश्न 2

(ख) 'विशेष शिक्षा' से क्या तात्पर्य है? इसके सिद्धांतों का वर्णन कीजिए।

उत्तर-संदर्भ-देखें-अध्याय-5, पृष्ठ-45, प्रश्न 5, पृष्ठ-39, 'विशेष शिक्षा के सिद्धांत'

प्रश्न 4. (क) मानसिक रूप से अक्षम बच्चे के साथ काम करते हुए आज जिन सात सिद्धांतों को ध्यान में रखेंगे, उनका वर्णन कीजिए।

उत्तर-संदर्भ-देखें-अध्याय-7, पृष्ठ-59, 'मानसिक रूप अक्षम बच्चों के साथ कार्य करना'

(ख) प्रमस्तिष्क घात से ग्रस्त बच्चे के किन्हीं पाँच लक्षणों को सूचीबद्ध कीजिए।

उत्तर-संदर्भ-देखें-अध्याय-8, पृष्ठ-70, प्रश्न 3

प्रश्न 5. (क) क्रोधावेश व्यवहार दर्शाने वाले बच्चे से आप कैसे निपटेंगे, वर्णन कीजिए।

उत्तर-संदर्भ-देखें-अध्याय-9, पृष्ठ-75, 'क्रोधावेश', पृष्ठ-79, प्रश्न 4

(ख) ऐसे पाँच तरीके बताइए जिनके द्वारा आप श्रवण क्षति वाले बच्चे को बोले के लिए प्रोत्साहित कर सकते हैं।

उत्तर-संदर्भ-देखें-अध्याय-11, पृष्ठ-92, 'श्रवण दोष वाले बच्चों के साथ काम करने के कुछ सिद्धांत', पृष्ठ-96, प्रश्न 7

प्रश्न 6. (क) उदाहरण देते हुए संचार प्रक्रिया के किन्हीं पाँच अवरोधकों का वर्णन कीजिए।

उत्तर-संदर्भ-देखें-अध्याय-12, पृष्ठ-100, प्रश्न 3

(ख) संचार की चाइल्ड-टू-चाइल्ड नीति क्या है? इसके सिद्धांतों की जानकारी दीजिए।

उत्तर-संदर्भ-देखें-अध्याय-14, पृष्ठ-113, 'बच्चे-से-बच्चे की कार्य नीति', 'बच्चे से बच्चे की कार्यनीति के सिद्धांत/उद्देश्य', पृष्ठ-117, प्रश्न 10

प्रश्न 7. (क) उदाहरण देते हुए प्रारंभिक बाल्यावस्था देखभाल और शिक्षा के प्रभावी पर्यवेक्षक की विशेषताओं का वर्णन कीजिए।

उत्तर-संदर्भ-देखें-अध्याय-17, पृष्ठ-141, 'पर्यवेक्षक की भूमिका', 'कार्य और विशेषताएँ', पृष्ठ-145, प्रश्न 2

(ख) आई.सी.डी.एस. कार्यक्रम के प्रभावी कार्यान्वयन में आने वाली कोई पाँच चुनौतियाँ बताइए।

उत्तर-संदर्भ-देखें-अध्याय-19, पृष्ठ-155, 'कुछ समस्यापूर्ण क्षेत्र'



QUESTION PAPER

December – 2023

(Solved)

बच्चों के लिए सेवाएं एवं कार्यक्रम
(Services and Programmes for Children)

D.E.C.E.-3

समय : 3 घण्टे |

| अधिकतम अंक : 100

नोट : किन्हीं पाँच प्रश्नों के उत्तर दीजिए। सभी प्रश्नों के अंक समान हैं।

प्रश्न 1. (क) निम्नलिखित में से किसी एक का विस्तारपूर्वक वर्णन कीजिए—

(i) किंडरगार्टन की विशेषताएँ और शिक्षिका की भूमिका
उत्तर—संदर्भ—देखें—अध्याय-2, पृष्ठ-13, प्रश्न 2, पृष्ठ-9, 'अध्यापिका की भूमिका'

(ii) बाल सदन की विशेषताएँ और शिक्षिका की भूमिका
उत्तर—संदर्भ—देखें—अध्याय-2, पृष्ठ-9, 'बाल सदन की संकल्पना', 'अध्यापिका की भूमिका'

(ख) टैगोर ने शिक्षण की किन तीन विधियों पर बल दिया? चर्चा कीजिए।

उत्तर—संदर्भ—देखें—अध्याय-2, पृष्ठ-9, 'टैगोर के शैक्षिक के मूल विचार'

(ग) शालापूर्व शिक्षा आंदोलन के अंतर्गत ताराबाई मोदक के कोई दो योगदान बताइए।

उत्तर—संदर्भ—देखें—अध्याय-2, पृष्ठ-15, प्रश्न 5

प्रश्न 2. (क) परिवार के सदस्यों का विकलांगता के प्रति रवैया और भावनाएँ क्या उनके अपने अपंग बच्चे के साथ अंतःक्रिया को प्रभावित करती हैं? चार उदाहरण देते हुए अपने उत्तर की पुष्टि कीजिए।

उत्तर—संदर्भ—देखें—अध्याय-6, पृष्ठ-55, प्रश्न 7, प्रश्न 8

(ख) माता-पिता को अपने बच्चे की अपंगता का पता लगने पर, वे जो मनोभाव अनुभव करते हैं, उनमें से किसी एक का उदाहरणों सहित वर्णन कीजिए।

उत्तर—संदर्भ—देखें—अध्याय-6, पृष्ठ-55, प्रश्न 5, प्रश्न 6

प्रश्न 3. (क) 'प्रमस्तिष्क घात' क्या है? वर्णन कीजिए। ऐसी किन्हीं पाँच विशेषताओं का वर्णन कीजिए। जो प्रमस्तिष्क घात से प्रभावित बच्चे में हो सकती हैं/देखी जा सकती हैं।

उत्तर—संदर्भ—देखें—अध्याय-8, पृष्ठ-70, प्रश्न 3

(ख) आक्रामक व्यवहार करने वाले बच्चे को अनुशासित करने (निपटने) के संबंध में शालापूर्व शिक्षिका का मार्गदर्शन आप कैसे करेंगे? चर्चा कीजिए।

उत्तर—संदर्भ—देखें—अध्याय-9, पृष्ठ-76, 'आक्रामक व्यवहार'

प्रश्न 4. (क) दृष्टि-दोष वाले बच्चे को चलने-फिरने में सहायता करने के संबंध में देखभालकर्ता को क्या उपाय करने चाहिए? वर्णन कीजिए।

उत्तर—संदर्भ—देखें—अध्याय-10, पृष्ठ-84, 'बच्चे की चलने-फिरने में सहायता करना'

(ख) ओष्ठ-पठन क्या है और इसे बच्चे को कैसे सिखाया जा सकता है? समझाइए।

उत्तर—संदर्भ—देखें—अध्याय-11, पृष्ठ-96, प्रश्न 8 (क)

प्रश्न 5. (क) एक प्रारंभिक बाल्यावस्था देखभालकर्ता के नाते एक ऐसा संदेश तैयार कीजिए, जिसे सामूहिक विचार-विमर्श की विधि से समुचित रूप से संप्रेषित किया जा सकता है। बताइए कि आपने यह संदेश किस विशिष्ट लक्ष्य-समूह के लिए तैयार किया है।

उत्तर—संदर्भ—देखें—अध्याय-13, पृष्ठ-107, प्रश्न 3, पृष्ठ-108, प्रश्न 4

(ख) आपके विचार में विचार-विमर्श की विधि इस संदेश को संप्रेषित करने के लिए क्यों उपयुक्त है? चर्चा कीजिए।

उत्तर—संदर्भ—देखें—अध्याय-13, पृष्ठ-104, 'सामूहिक विचार-विमर्श आयोजित करने में शामिल चरण'

(ग) संचार की महिला-से-महिला कार्यनीति का उचित उदाहरणों सहित वर्णन कीजिए।

उत्तर—संदर्भ—देखें—अध्याय-14, पृष्ठ-113, 'महिला-से-महिला या लड़की-से-लड़की कार्यनीति'

प्रश्न 6. (क) प्रारंभिक बाल्यावस्था देखभाल और शिक्षा केन्द्र के संदर्भ में प्रबंधन प्रक्रिया से जुड़े किन्हीं दो कौशलों का वर्णन कीजिए।

उत्तर—संदर्भ—देखें—अध्याय-17, पृष्ठ-141, 'प्रबंधन से संबंधित कौशल'

Sample Preview of The Chapter

Published by:



**NEERAJ
PUBLICATIONS**

www.neerajbooks.com

बच्चों के लिए सेवाएं एवं कार्यक्रम (Services and Programmes for Children)

प्रारम्भिक बाल्यावस्था देखभाल एवं शिक्षा में
सैद्धांतिक एवं व्यावहारिक पक्ष
(Theory and Practice in Early Childhood Care and Education)

प्रारम्भिक बाल्यावस्था देखभाल एवं शिक्षा: एक परिप्रेक्ष्य
(Early Childhood Care and Education in Perspective)



परिचय

व्यक्ति की बाल्यावस्था आनन्ददायक और कौतूहल से भरी होती है। उसे अपने सामने की सभी वस्तुएं एवं घटनाएं रोचक लगती हैं। छोटे बच्चे निडर होते हैं और सभी वस्तुओं एवं घटनाओं को जानने में रुचि रखते हैं। ऐसी स्थिति में बच्चों का पालन-पोषण सतर्कता से करना आवश्यक हो जाता है, जिससे वे अपने माता-पिता तथा अन्यो के साथ निकट का भावनात्मक संबंध स्थापित कर सकें और उनका सर्वांगीण विकास हो सके। मानव शिशु की देखभाल अन्य जातियों (Species) के शिशु की देखभाल से अधिक करनी पड़ती है, क्योंकि मनुष्य का शिशु लम्बे समय तक वयस्क लोगों पर निर्भर करता है। सम्पूर्ण विकास के लिए उसकी आवश्यकताओं को स्नेहपूर्वक पूरा करने का प्रयास करना चाहिए। विभिन्न लोगों द्वारा प्रारम्भिक बाल्यावस्था में बच्चों की देखभाल एवं शिक्षा (ECCE) को अति महत्वपूर्ण माना गया है। वस्तुतः इस पर ध्यान देने से देश का भविष्य अच्छा हो सकता है।

अध्याय का विहंगावलोकन

प्रारम्भिक बाल्यावस्था देखभाल एवं शिक्षा का कार्यक्षेत्र

प्रारम्भिक बाल्यावस्था देखभाल एवं शिक्षा के महत्त्व तथा योजनाओं को लोगों द्वारा सराहा गया है। राष्ट्रीय शिक्षा नीति (1986) ने भी बाल-विकास के सभी पहलुओं जैसे पोषण, स्वास्थ्य, सामाजिक, शारीरिक भावनात्मक विकास आदि पर जोर दिया है। यह भी कहा

गया कि ई.सी.सी.ई. के कार्यक्रम बालकेन्द्रित और खेल पर आधारित होंगे। औपचारिक शिक्षा अर्थात् पढ़ने-लिखने और हिसाब पर विशेष जोर दिया जायेगा। इसमें बच्चों के विकास के साथ-साथ उनकी देखभाल पर भी बल होगा और उसकी मूल आवश्यकताओं पर ध्यान देना होगा। बच्चों को अन्वेषण के लिए किसी वस्तु की खोज करने तथा खेलने का अवसर देना होगा ताकि उनकी कल्पना-शक्ति का विकास हो।

बच्चों के सुनिश्चित विकास के लिए उसके स्वास्थ्य व पोषण पर ध्यान देना अति आवश्यक है, इसके लिए मातृ स्वास्थ्य में सुधार, टीकाकरण, पूरक आहार, बीमारियों की रोकथाम जरूरी है। बच्चों के माता-पिता और पालनकर्ता को विभिन्न आयु के बच्चों के पोषण की विस्तृत जानकारी होनी चाहिए।

विभिन्न अनुसंधानों से प्रेरण के संबंध में निम्नलिखित तथ्यों की जानकारी मिलती है—

- बच्चे लोगों और वस्तुओं से अंतःक्रिया करके सीखते और विकास करते हैं।
- बच्चे के विकास के लिए स्वस्थ वातावरण, सामग्री, खेलने के अवसर की जरूरत होती है।
- बच्चों को सीखने की प्रक्रिया में शामिल होने के लिए प्रेरित करना चाहिए और उन्हें आजमाने और खोज करने का अवसर देना चाहिए।
- बच्चे के विकास के सामाजिक, भावात्मक, शारीरिक और मानसिक पहलू एक-दूसरे से जुड़े होते हैं, इसलिए सभी पर ध्यान देना जरूरी है, ताकि उसका विकास प्रभावित न हो।

2 / NEERAJ : बच्चों के लिए सेवाएं एवं कार्यक्रम

इस प्रकार के अन्य अनुसंधानों से यह निष्कर्ष निकलता है कि बच्चे के समग्र विकास के लिए ई.सी.सी.ई. कार्यक्रम चलाना जरूरी है। इसके लिए सार्थक प्रयास जरूरी हैं, जिसके सीखने से ऐसे नागरिक तैयार हो सकें, जो बच्चों का आवश्यक देखभाल कर सकें।

प्रारंभिक बाल्यावस्था विकास के दौरान

अंतःक्षेपों का तर्काधार

अनेक वैज्ञानिक अनुसंधानों से ज्ञात होता है कि बच्चों के प्रारंभिक वर्षों में सर्वाधिक बौद्धिक विकास होता है, जो अनुकूलतम स्थिति में होता है। प्रारंभिक बाल्यावस्था अनुकूलतम विकास के लिए व्यक्ति के जीवन में प्रारंभिक वर्ष सर्वाधिक निर्णायक माने जाते हैं। यह अवधि 6 वर्ष तक होती है, जिसमें विकास तेजी से होता है। अनुकूलतम स्थितियां विकास को प्रोत्साहित करती हैं, परन्तु प्रतिकूल स्थितियां, जैसे-भोजन की कमी, खराब स्वास्थ्य, काम करने की खराब स्थितियां आदि विकास में बाधक होती हैं और बच्चे की अनुकूल स्थितियों को प्रभावित करती हैं। इस प्रकार विकास पूर्ण कल्याण की भावना का विकास है, जो बच्चे के स्वस्थ वातावरण में बढ़ती है।

ई.सी.सी.ई. कार्यक्रम के संचालन का महत्त्व गरीब और पिछड़े परिवारों के लिए भी है। प्रायः विकासशील देशों में कई परिवारों के बच्चे अल्प सुविधा प्राप्त होते हैं और सामाजिक-आर्थिक अभाव का सामना प्रारंभिक निर्णायक वर्षों में ही करते हैं, जिससे उनकी पूर्ण क्षमता स्तर का विकास नहीं हो पाता। निम्न सामाजिक-आर्थिक स्तर की स्त्रियों का अधिक समय जीविका कमाने में व्यतीत होता है, जो बच्चों के पालन-पोषण की तरफ ध्यान नहीं दे पातीं। इस अपूर्णता को कार्यक्रम के द्वारा ही पूरा किया जा सकता है।

अब यह प्रमाणित हो रहा है कि अंतःक्षेप का सर्वाधिक प्रभावशील क्षेत्र ई.सी.सी.ई. कार्यक्रम है। सम्पूर्ण विश्व में प्रारंभिक बाल्यावस्था देखभाल एवं शिक्षा के सम्बन्ध में किये गये शोधों गरीबी और अभावों की क्षतिपूर्ति यथा समय अंतःक्षेप द्वारा की जा सकती है और उसका बच्चों पर सकारात्मक प्रभाव पड़ता है।

बच्चों को प्यार, स्नेहपूर्ण देखभाल और सेवा प्राप्त करने का अधिकार है। उन्हें अपना पूर्ण विकास करने का प्रत्येक अवस्था में अवसर मिलना चाहिए, ये अधिकार मानवाधिकार के अन्तर्गत आते हैं, इसलिए सदैव सभी जगह स्वीकार करने चाहिए।

ई.सी.सी.ई. कार्यक्रम से बच्चों में दूसरों के साथ सदभावना और प्रत्येक जीवित प्राणी के प्रति जुटाए रखने जैसे मूल्य सम्प्रेषित किये जा सकते हैं। कुछ बच्चे घर पर माता-पिता और अन्य वयस्कों के साथ अंतःक्रिया करके बहुत सीख जाते हैं और उन्हें शालापूर्व कार्यक्रम का अभाव महसूस नहीं होता। ऐसा भी देखा गया है कि अच्छे परिवार बच्चों को वैसे उद्दीपन से पूर्ण क्रियाकलाप और दूसरे बच्चों की संगति नहीं दे पाते, जो कि एक अच्छे विद्यालय पूर्व में सरलता से मिल जाता है। बच्चों को मिलकर कार्य करने में अलग आनन्द आता है, जिससे कई लाभ होते हैं।

बच्चों को दी जाने वाली अधिक आदर्शवादी सीख अधिक सफल नहीं होती है। प्रारम्भ के छः वर्षों में बच्चों को दिया गया योगदान एक अच्छे वयस्क के निर्माण में सहायक होता है।

सभी प्रकार के राजनीतिक विचाराधारा वाले देशों के सामाजिक न्याय, मानव अधिकारों और समानता के मूल्यों का पालन करना पड़ता है। प्रारंभिक वर्षों में बच्चों की देखभाल और शिक्षा ऐसा

मापदण्ड है, जिससे सामाजिक-आर्थिक स्तर एवं लिंग की असमानता को मापा जा सकता है। इससे दक्षिण एशियन संस्कृतियों की लड़कियों को लाभ हो सकता है, जिन्हें निम्न श्रेणी का नागरिक माना जा सकता है।

देश में कई परिवारों द्वारा प्रारंभिक बाल्यावस्था में देखभाल अनेक कार्यक्रम में सहायता के लिए आवश्यक हैं, जैसे आय उत्पादक कार्यक्रम में, ग्रामीण विकास योजनाओं में, प्रारंभिक बाल्यावस्था में देखभाल को शामिल करने से बच्चों और स्त्रियों दोनों को लाभ हो सकता है।

वर्तमान में परिवार का ढाँचा तेजी से बदल रहा है। फलस्वरूप प्रारंभिक बाल्यावस्था का विकास अधिक आवश्यक हो गया है। संयुक्त परिवार में बच्चे कई लोगों से अंतःक्रिया करते थे, परन्तु इस प्रकार के परिवार तेजी से समाप्त हो रहे हैं। समाज नाभिकीय परिवारों के रूप में बदल रहा है। कई परिवारों में माता एवं पिता अलग-अलग रहते हैं। लोगों का प्रवास भी तेजी से हो रहा है। प्रायः पुरुष शहर चले जाते हैं और स्त्रियां घर में अकेले सभी कार्य करती हैं। यहाँ तक कि स्त्रियां भी काम करने के लिए बाहर जाने लगी हैं और उनके कार्यस्थलों पर बच्चों की देखभाल की कोई व्यवस्था नहीं होती। ऐसी स्थिति में बाल्यावस्था देखभाल एवं शिक्षा की मांग बढ़ रही है।

इस प्रकार बाल्यावस्था देखभाल एवं शिक्षा नैतिक, सामाजिक और आर्थिक आदि अनेक दृष्टियों से महत्त्वपूर्ण है।

क्या करना चाहिए?

ऐसे परिवारों तक प्रारंभिक बाल्यावस्था देखभाल एवं शिक्षा (ECCE) को पहुँचाना चाहिए, जो जरूरतमंद हैं। ऐसे बच्चों की पहचान की जानी चाहिए जो वास्तव में अभावग्रस्त हैं और उनके लिए समुचित अंतःक्षेप की व्यवस्था की जानी चाहिए।

भारत की जनसंख्या के अध्ययन से ज्ञात है कि 0-6 आयु वर्ग के बच्चों से सम्बन्धित परिवारों की संख्या अधिक जरूरतमंद और अधिक है। सभी जरूरतमंद लोगों तक ई.सी.सी.ई. कार्यक्रम को पहुँचाने के लिए विस्तार जरूरी है, परन्तु उतना ही आवश्यक उसकी गुणवत्ता में सुधार करना है। इस संबंध में कुछ विशेषज्ञों का विचार है कि जब ई.सी.सी.ई. कार्यक्रम द्वारा प्रदत्त सेवाओं की गुणवत्ता और संख्या एक निर्णायक गुणवत्ता और संख्या से भी कम हो जाती है तो कार्यक्रम की प्रभाविता कम हो जाती है और कार्यक्रम के उद्देश्य पूरे नहीं होते। गुणवत्ता के सुधार में कर्मिकों को काफी और समुचित प्रशिक्षण देना और सामग्री संबंधित सुविधायें देना शामिल है।

अभावग्रस्त बच्चों के परिवारों के सदस्यों को ज्ञान शून्य नहीं मानना चाहिए, इसलिए बच्चों के कार्यक्रम की सेवाओं को निर्धारित करने, मॉनीटर करने आदि में उनको शामिल करना चाहिए। अधिभावकों को संस्कृति, मूल्यों और परंपराओं के अनुकूल कार्यक्रम बनाना चाहिए।

बच्चों से सम्बन्धित सभी योजनाओं में उनके आरंभिक दो वर्षों को भी शामिल करना चाहिए, क्योंकि प्रायः इस ओर ध्यान नहीं दिया है।

बच्चों के कार्यक्रमों में आपसी तालमेल होना चाहिए। पोषण स्वास्थ्य और शिक्षा के कार्यक्रमों में खंडों को लागू न करके समेकित रूप में करने का प्रयास करना चाहिए, ताकि सभी बच्चों को एक साथ और समान समय में लाभ मिल सके। इसका अच्छा प्रभाव होता है। कार्यक्रम की सफलता के लिए विभिन्न प्रकार के प्रयास करने चाहिए, जैसे उत्पादन के साथ सेवा भाव।

माता-पिता को लचीली और बालकेन्द्रित शिक्षा के महत्त्व के साथ बच्चों द्वारा कौशल सीखने पर भी ध्यान देना चाहिए। यह कठिन कार्य है, इसलिए परिवार के सदस्यों एवं कार्यकर्ताओं द्वारा छोटे बच्चों को अनौपचारिक तरीके का प्रयोग करके समझने का प्रयास करना चाहिए। इन बच्चों की शिक्षा, खेल माध्यम (Play way) और क्रिया आधारित (Activity Centered) होनी चाहिए, और उनमें शिक्षा के प्रति समुचित दृष्टिकोण अपनाना चाहिए, जिससे वे विद्यालय छोड़ने को प्रेरित न हों।

स्वयंसेवी संस्थाओं ने भी ई.सी.सी.ई. की कई योजनाएं क्रियान्वित की हैं, परन्तु ये छोटे पैमाने पर हैं। बड़े पैमाने पर चलाने से इनसे लाभ के साथ हानियां भी हो सकती हैं। भारत में राज्यों द्वारा संचालित बड़ा देखभाल कार्यक्रम—समेकित बाल विकास कार्यक्रम परियोजना है, परन्तु यह एक मॉडल पर जोर देता है कि प्रारंभिक बाल्यावस्था विकास के प्राथमिक लक्ष्य को प्राप्त करने के लिए विभिन्न योजनाओं पर बल देना चाहिए।

विदेशों में चल रहे कुछ ई.सी.सी.ई. कार्यक्रम

प्रमुख कार्यक्रम निम्नलिखित हैं—

नेपालस प्रोजेक्ट एंट्री प्वाइंट (Nepal's Project Entry Point)—इस कार्य में ई.सी.सी.ई. कार्यक्रम में कम खर्च आता है और ग्रामीण निर्धन महिलाओं के अनुकूल है। इसमें स्त्रियां समूह बना लेती हैं और बारी-बारी अपने घर पर बच्चों की देखभाल करती हैं। इसमें माताओं को प्रशिक्षण दिया जाता है और सामग्री की एक बुनियादी किट होती है, जिसमें खिलौने आदि होते हैं। कार्यक्रम का निर्णय स्त्रियां ही लेती हैं।

पेरुस प्रोग्राम आफ इनिशियल एजुकेशन (Pronoei)—एक विश्वविद्यालय ने उसकी पहल की। उसके स्वयंसेवकों ने पोषण शिक्षा और 3-5 वर्ष के लिये बच्चों के लिये अल्पाहार बनाने का उत्तरदायित्व लिया। घोर मृत्युदर (150) वाले पहाड़ी गाँव को इसके लिए चुना गया। इसके लिए मॉडल तैयार हुआ, जिसमें प्रत्येक बालघर में 30 बच्चे होते थे। शालापूर्व शिक्षा का कार्य एक ऐनिमेटर करता था जिसमें प्रशिक्षण, पाठ्यचर्या और सामग्री दी जाती थी। जिसमें बच्चों को समुचित गतिविधियां आयोजित करना बताया जाता था। यह समुदाय भागीदारी का अच्छा उदाहरण है।

थाईलैंड का समेकित पोषण और समुदाय विकास कार्यक्रम (Thailand's Integrated Nutrition and Community Development Programme)—कम लागत वाला एक कार्यक्रम गरीबी उन्मूलन के साथ स्वास्थ्य पोषण और वृद्धि को भी इसमें शामिल किया गया। इसका मुख्य उद्देश्य पालनकर्ता और बाल-गतिविधियों पर ध्यान देना था, जो लोगों की संस्कृति और परम्परा के अनुकूल थी। स्वास्थ्य और पोषण का संदेश वीडियो कैसेट द्वारा निरक्षर माताओं को समझने के लिए दिया गया।

इस प्रकार ई.सी.सी.ई. प्रारम्भिक बाल्यावस्था में किया गया एक महत्वपूर्ण निवेश है, जो बच्चों के भविष्य को सुधारने में सहायक होगा। इससे लोग बाल-विकास कार्यक्रम में भाग लेकर इसको बढ़ावा देने का प्रयास करेंगे।

बोध प्रश्न

प्रश्न 1. आपके विचार में ई.सी.सी.ई. का उद्देश्य और दृष्टिकोण क्या होना चाहिए?

उत्तर—ई.सी.सी.ई. का उद्देश्य और दृष्टिकोण—छोटे बच्चों के लिए प्रारम्भिक देखभाल एवं शिक्षा निश्चित रूप से महत्वपूर्ण और आवश्यक है। इसका दृष्टिकोण एवं उद्देश्य निम्नलिखित है—

(1) राष्ट्रीय शिक्षा नीति (1986) ने ई.सी.सी.ई. के दृष्टिकोण के महत्त्व पर प्रकाश डालते हुए कहा है—

“बाल विकास के समग्र स्वरूप अर्थात् पोषण, स्वास्थ्य और सामाजिक, मानसिक, शारीरिक, नैतिक और भावनात्मक विकास को पहचानते हुए, प्रारम्भिक बाल्यावस्था देखभाल एवं शिक्षा (ई.सी.सी.ई.) को उच्च प्राथमिकता दी जायेगी।

(2) बाल-विकास का सम्बन्ध बच्चे की विकास विधि के साथ उसके अपेक्षित देखभाल से भी सम्बन्धित है, इसलिए बच्चे की समुचित देखभाल भी होनी चाहिए। इसके अन्तर्गत बच्चे की सुरक्षा, भोजन और स्वास्थ्य देखभाल संबंधी मूल आवश्यकताओं को पूरा करना चाहिए। इसके साथ बच्चे की प्रेरण, लोगों से अंतःक्रिया, स्नेह, सुरक्षा और परिपोषण सम्बन्धी आवश्यकताएं, समान रूप से पूरी करनी चाहिए।

(3) बच्चे के अन्वेषण, खोज और खेल की कल्पना को बढ़ावा देने के लिये उन्हें समुचित अवसर प्रदान करने चाहिए। ये कार्य बच्चे के अधिगम में बहुत सहायक होते हैं।

(4) बच्चे के विकास की स्वस्थ नींव स्थापित करने के लिए निम्नलिखित कार्य अवश्य करना चाहिए—

(i) मातृक स्वास्थ्य में सुधार करना चाहिए।

(ii) माता एवं अन्य पालनकर्ताओं दोनों को, स्तनपान कराने, टीकाकरण, पूरक आहार, वृद्धि अनुवीक्षण, बाल्यावस्था का सामान्य बीमारियों के निवारण और प्रबन्ध के विषय में शिक्षित करना चाहिए।

(iii) माता एवं अन्य पालनकर्ताओं को यह जानकारी दी जानी चाहिए कि विभिन्न आयु वर्ग के बच्चों की पोषण संबंधी जरूरतें क्या हैं और उनकी पूर्ति किस प्रकार की जा सकती है, चाहे वह परिवार किसी भी आयु-वर्ग से सम्बद्ध हो।

(iv) पोषण और स्वास्थ्य संबंधी आवश्यकताओं की पूर्ति और बच्चे की शारीरिक देखभाल करने के अलावा, बच्चे को प्रेरण (उद्दीपन) सीखने के अवसर प्रदान करने चाहिए।

(5) प्रारम्भिक बाल्यावस्था के दौरे बच्चे को सीखने के अवसर प्रदान करके उसके विकास में बढ़ोत्तरी करने का प्रयास किया जाता है, तथापि बच्चे को सिखाने के अनुभवों की योजना बच्चे के मानसिक और शारीरिक स्तर के अनुरूप बनाई जानी चाहिए। प्रेरण अथवा उद्दीपन (Stimulations) शैशवावस्था के प्रारम्भिक महीनों से ही दिया जाना चाहिए।

(6) प्रेरण में विशेष रूप से ऐसी गतिविधियों को शामिल करना चाहिए, जिनके दौरान बच्चे और पालनकर्ता के मध्य गहरी अंतःक्रिया हो। इन गतिविधियों का आधार बच्चे और पालनकर्ता के मध्य घनिष्ठ प्रेमपूर्ण सम्बन्ध होना चाहिए। एक स्नेही और जानकार पालनकर्ता के पास बच्चे के अनुकूलतम विकास की कुंजी होती है।

(7) प्रशिक्षित कार्यकर्ता को (ई.सी.सी.ई.) माता-पिता के मन में यह आत्म विश्वास पैदा करना चाहिए कि निर्धन और निरक्षर होते हुए भी अपने बच्चे को प्रेरण (उद्दीपन या सीखने के अनुभव) प्रदान कर सकते हैं, और उन्हें ऐसा प्रारंभिक शैशवावस्था से ही शुरू कर

4 / NEERAJ : बच्चों के लिए सेवाएं एवं कार्यक्रम

देना चाहिए। माता-पिता को यह भी जानकारी देनी चाहिए कि किस प्रकार उद्दीपन दिया जा सकता है।

(8) बच्चा जब तक तीन वर्ष की आयु पूरा करता है तब तक माता-पिता और परिवार के अन्य सदस्यों से प्रेरण प्राप्त करता है, परन्तु तीन वर्ष के पश्चात बच्चे शालापूर्व केन्द्रों में जाना शुरू कर देते हैं, इसलिए केवल परिवार के सदस्यों को ही नहीं, बल्कि शालापूर्व केन्द्रों के कार्यकर्ताओं को भी इस संबंध में शिक्षित करना चाहिए ताकि वे सभी प्रेरण या उद्दीपन प्रदान सकें। शालापूर्व केन्द्रों में बालवाड़ी, आंगनबाड़ी, नर्सरी स्कूल या कोई अन्य प्रकार का प्रारंभिक बाल्यावस्था देखभाल शिक्षा केन्द्र हो सकता है।

(9) बच्चों के कल्याण के लिए विभिन्न स्थितियों एवं परिवेश में अनेक तथ्यों का अनुसंधान किया गया है। इन तथ्यों को प्रयोग में लाकर बच्चों का अच्छा विकास किया जा सकता है। ये तथ्य अग्रलिखित हैं—

(i) सीखने के लिए यह जरूरी है कि बच्चे सक्रिय रूप से सीखने की प्रक्रिया में शामिल हों। उनको खेलने और वस्तुओं को आजमाने या खोज करने का पर्याप्त अवसर दिया जाना चाहिए।

(ii) बच्चों को लोगों और वस्तुओं के साथ अंतःक्रिया करने का अवसर देना चाहिए, जिससे वे कुछ सीखें और विकास करें।

(iii) बच्चे का विकास के प्रति एक सुनिश्चित दृष्टिकोण होना चाहिए। वस्तुतः शारीरिक, मानसिक, सामाजिक और भावात्मक पहलू आपस में सम्बद्ध होते हैं, इसलिए बच्चे के साथ जो भी घटित होता है वह प्रत्येक क्षेत्र में उसके विकास को प्रभावित करता है।

(iv) बच्चे के विकास के लिए स्वस्थ वातावरण, अनुकूल स्थान, सामग्री और खेलने के समय और ऐसे वयस्क जो सीखने की प्रक्रिया को बढ़ावा देते हैं और संबंधों को पोषित करते हैं, आदि आवश्यक है।

(10) बच्चों के सर्वांगीण विकास के लिए समुचित ई.सी.सी.ई. कार्यक्रम चलाना आवश्यक है और इन कार्यक्रमों का बच्चे के प्रति एक समग्र दृष्टिकोण होना चाहिए। बच्चों की विशिष्ट आवश्यकताओं की पहचान करना चाहिए और इसको पूरा करने के लिए सार्थक प्रयास करने चाहिए, जिससे समुदाय आने वाली पीढ़ी के लिए ऐसा कर सके।

प्रश्न 2. अपने शब्दों में प्रारंभिक बाल-विकास अंतःक्षेपों के लिए तर्काधार बताइए।

अथवा

प्रारंभिक बाल्यावस्था के विकास के महत्त्व की विवेचना कीजिए।

उत्तर—प्रारंभिक बाल-विकास अंतःक्षेपों के लिए तर्काधार—प्रारंभिक बाल-विकास अंतःक्षेपों के लिए प्रमुख तर्काधार निम्नलिखित हैं—

(1) **अनुकूलतम विकास—प्रारंभिक बाल्यावस्था बच्चों के अनुकूलतम विकास की अवधि है। इस सम्बन्ध में निम्नलिखित तर्क दिये जा सकते हैं—**

(i) विभिन्न वैज्ञानिक अनुसंधानों से ज्ञात होता है कि बाल्यावस्था के प्रारंभिक वर्षों में बच्चों के बौद्धिक स्तर, व्यक्तित्व और सामाजिक व्यवहार में तेजी से विकास होता है।

(ii) अनुकूलतम विकास के लिए व्यक्ति के जीवन के प्रारंभिक वर्ष सर्वाधिक निर्णायक माने जाते हैं। बच्चों के प्रारंभिक छः वर्ष विकास की निर्णायक अवधि है, क्योंकि इस अवधि में विकास तेज गति से होता है। फलस्वरूप यही वह समय है जब वातावरण संबंधी संवृद्धि या अभाव का बच्चे पर सबसे अधिक प्रभाव पड़ता है।

(iii) इस अवस्था में विकास तेज गति से हो रहा होता है। इसलिए पर्याप्त भोजन, स्वास्थ्य देखभाल, परिपोषण या प्रेरण की कमी, सहने की प्रतिकूल स्थितियां और काम करने की शोषक स्थितियां, जैसे प्रतिकूल अनुभव, विकास में पर्याप्त सीमा तक बाधा डालते हैं।

(iv) दूसरी ओर अनुकूल स्थितियां विकास को प्रोत्साहित करती हैं। यह प्रभाव लम्बे समय तक विद्यमान रहता है, क्योंकि बाद के वर्षों में होने वाले विकास की नींव इस उम्र में रखी जाती है।

(v) यह अवस्था पूर्ण कल्याण की भावना का परिणाम है। विकास में बच्चे को केवल भोजन देने और शारीरिक देखभाल जैसे केवल भौतिक क्रियाओं का परिणाम नहीं है, बल्कि गुणों के विकास का परिणाम है जो बच्चे के अन्दर एक स्वस्थ वातावरण में पलने से बढ़ते हैं। यह ऐसा पर्यावरण है जो प्रेम, स्नेह और सीखने के अवसरों से भरा होता है।

(2) **अल्प सुविधा बच्चों के कल्याण के लिए—प्रारंभिक बाल्यावस्था के वर्षों का महत्त्व विकासशील देशों के अल्प सुविधा प्राप्त बच्चों के कल्याण के लिए विशेष महत्त्वपूर्ण है। इसके निम्नलिखित कारण हैं—**

(i) विकासशील देशों में अधिकांश परिवार गरीब हैं। फलस्वरूप इनके कारण होने वाले सामाजिक-आर्थिक अभाव, जीवन के शुरू के 6 वर्षों के दौरान बच्चों को अनेक प्रकार के अभावों से ग्रस्त स्थितियों में जीवित रहने को विवश करते हैं, जिनके कारण ये बच्चे पूर्ण क्षमता को विकसित नहीं कर पाते।

(ii) सामाजिक, आर्थिक और सांस्कृतिक रूढ़ियों और अज्ञान के कारण कुछ परिवार विशेष रूप से कमजोर वर्गों के परिवार अपने बच्चों को एक स्वस्थ माहौल, पर्याप्त पोषण और प्रेरण के अवसर देने में असमर्थ होते हैं।

(iii) विशेष रूप से निम्न सामाजिक, आर्थिक स्तर वाली स्त्रियों का अधिकांश समय जीविका कमाने में व्यतीत होता है। ऐसी स्थिति में यह आवश्यक हो जाता है कि छोटे बच्चों की घर से बाहर काम करने वाली माताएँ जिन अभावों का सामना करती हैं, उनकी क्षतिपूर्ति के लिए एक संगठित अंतःक्षेप के रूप में ई.सी.सी.ई. कार्यक्रम चलाए जाएं।

(3) **कार्यक्रम का सकारात्मक प्रभाव—अब यह प्रमाणित हो चुका है कि ई.सी.सी.ई. अंतःक्षेप अत्यन्त प्रभावशील क्षेत्र है, जो निम्नलिखित बातों से स्पष्ट है—**

(i) बच्चों के प्रारंभिक वर्षों में अंतःक्षेप के द्वारा अभावचक्र को समाप्त किया जा सकता है।